चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
6

एवी. एम्. की सर्वोच्च सफलता !

कुछ ही दिनों के अन्दर कलकत्ते में प्रदर्शित होने वाला है।

चन्दामामा

विषय-सूची

इनके अलावा

मन बहलाने वाली पहेलियाँ, सुन्दर चित्र और कई प्रकार के तमाशे हैं।

डोंगरे का बालामृत

कुछ मातायें यह नहीं जानतीं!

बच्चे के लिये और आपके लिये भी।

Johnson's BABY POWDER

जान्सन्स बेबी पाउडर

हेल्थ-सील खरीदिए !

★

राष्ट्र का स्वास्थ्य उसकी अति-प्रधान संपदाओं में से एक है। अन्य क्षेत्रों की तरह ही हमारी स्वास्थ्य-सेवाएँ भी इस हालत में नहीं हैं कि हमारी आवश्यकताएँ पूरी कर सकें। आर्थिक विषमता के कारण उनका आवश्यकतानुसार विस्तार करना भी असंभव हो गया है। इसलिए इस अभाव की पूर्ति के लिए सरकार और जनता, दोनों को हाथ मिलाना है। अनेक अन्य देशों में हेल्थ-सील और हेल्थ-स्टांप भी उक्त देशों के सरकारों के स्वास्थ्य-कार्यक्रमों की सहायता करते हैं। भारत-सरकार के स्वास्थ्य-मंत्रालय ने भी २-अक्तूबर १९५१ से हेल्थ-सीलों के विक्रय के लिए एक आंदोलन शुरू करने का निश्चय किया है। ये सील एक एक के, एक रुपए, चार आने और एक आने के दाम पर सभी डाक-घरों में बेचे जाएँगे। अस्वस्थ और पीड़ित मनुष्यता की सुश्रूषा के लिए मैं हरेक से इस आंदोलन की सहायता करने की प्रार्थना करती हूँ। किसी भी उत्तम आदर्श के लिए स्वयं-सेवा का प्रयत्न सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न है और मेरा विश्वास है कि सार्वजनिक सहयोग प्राप्त होगा।

अमृत कौर

स्वास्थ्य-मंत्रिणी

भारत

भारत सरकार, नई दिल्ली, के
स्वास्थ्य-मंत्रालय द्वारा प्रकाशित

एम. ए. पी. इंडस्ट्रीज़ मद्रास के कृपा-सौजन्य से

वर्ष 3
अंक 4

सितम्बर
1951

चन्दामामा

सम्पादक : चक्रपाणी

कुवलय-पीडन नामक हाथी का संहार करके कृष्ण और बलराम कंस के सभा-भवन के द्वार पर खड़े होकर तमाशा देखने लगे। थोड़ी दूर पर कंस के सामने मल्ल-युद्ध के लिए अखाड़ा बनाया गया था। उसमें चाणूर और मुष्टिक नामक दो वीरों का कौशल देख कर सब लोग खुश हो रहे थे। उसी समय कंस के कहने से मुष्टिक ने दरवाज़े की ओर फिर कर ताना मारते हुए कहा—'हे कृष्ण-बलराम! आओ! हमारे साथ लड़कर हमें हराओ! तुम्हारा कौशल देखकर महाराज भी खुश होंगे।' कृष्ण और बलराम चाणूर-मुष्टिक से भिड़ गए। उनका कौशल देख कर सब लोग वाह! वाह! करने लगे। थोड़ी देर तक इस तरह खेलने के बाद कृष्ण ने चाणूर और बलराम ने मुष्टिक को पकड़ कर गेंद की तरह आसमान में उछाल दिया। नीचे गिरते ही दोनों ने 'कृष्ण! कृष्ण!' कह कर जान छोड़ दी। इसके बाद और भी कई वीरों ने उन दोनों के हाथ मुक्ति पाई।
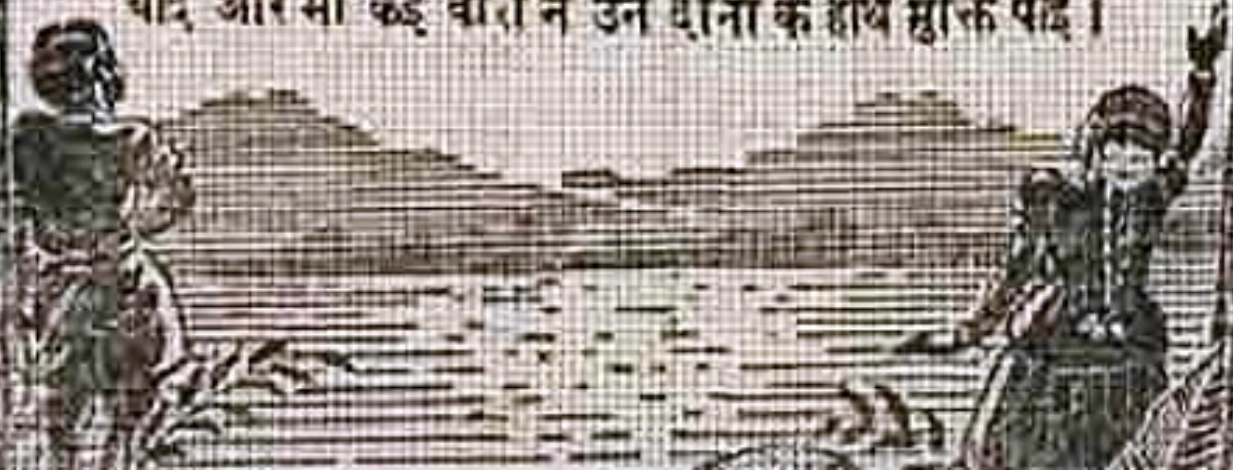
नेकी का बदला

नदी किनारे एक पेड़ था
घनी छाँह थी जिसकी सुखकर।
एक पखेरू बना घोंसला
रहता था उसकी शाखा पर।

एक रोज़ जब वह चिड़िया थी
बैठ डाल पर हवा खा रही;
उसने देखा कि भिड़ एक थी
नीचे जल में बही जा रही।

बहुत छटपटाती कोशिश कर
अपनी जान बचाने की वह।
किंतु सभी कोशिशें अंत में
व्यर्थ विफल होकर जातीं रह।

जब यह देखा तो पंछी का
पिघल गया मन, करुणा आई।
टहनी एक तोड़ उस तरु की
नीचे जल में तुरत गिराई।

वह भिड़ उसका लिए सहारा
चली तैर कर, तट पर आई।
किसी तरह यों डूब-तैर कर
उसने अपनी जान बचाई।

'बैरागी'

कुछ दिन बीते, एक शिकारी
उस पेड़ की ओर आ निकला।
वह जंगल में तो चिड़ियों का
ही शिकार था खेलने चला।

देख डाल पर अपनी चिड़ियों
को मन में वह हर्षित होकर,
तुरत निशाना लगा लगाने
उसे मारने का निश्चय कर।

इतने में भन्नाती आई
भिड़, उसने देखी सब हालत।
उसने देखा—'आई है अब
उसके मित्र पर बड़ी आफत।'

काट लिया बस, उचक शिकारी
को, चूका बेतरह निशाना।
छूट गई बन्दूक, पड़ा अब,
चिड़ियों का सब ख्याल भुलाना।

अपनी जान बचा कर पंछी
शीघ्र यहाँ से भाग उड़ चला।
सचमुच मिल जाता अवश्य ही
नेकी में नेकी का बदला।

स्कूल का घंटा बजा। गणित के अध्यापक वर्ग में आए। 'कल जो हिसाब दिए थे, वे कर लाए हो?' उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा। लेकिन कोई हिसाब नहीं कर लाया था। सभी डर रहे थे कि अब न जाने उन्हें क्या सजा मिलेगी! लेकिन एक लड़का सभी हिसाब कर लाया था। मास्टर ने उसको दाद दी और बाकी लड़कों को खूब पीट कर बेंच पर चढ़ाया। वे सभी रोने लगे। उन्हें देख कर वह लड़का जो सभी हिसाब कर लाया था, रोने लगा। यह देख कर अध्यापक को बहुत अचरज हुआ। उन्होंने पूछा—'लड़के! तुम क्यों रोते हो? तुम्हें तो सजा नहीं मिली!' उस लड़के ने जवाब दिया—'अध्यापक जी! ये हिसाब मैंने खुद नहीं किए। मेरे बड़े भाई ने बता दिए। नहीं तो मुझे भी अपने साथियों के साथ मार खाकर बेंच पर चढ़ना ही पड़ता।' उस लड़के को इस तरह निर्भय होकर सत्य बोलते देख मास्टर को बहुत आश्चर्य और आनंद भी हुआ। 'यह लड़का आगे चल कर जरूर सबका मार्ग-दर्शक बनेगा और अपने देश और परिवार का नाम रोशन करेगा।' उन्होंने अपने मन में सोचा। मास्टर ने जो सोचा था वही हुआ। उस लड़के ने बड़े होने के बाद बहुत नाम कमाया और भारत-सरकार का दीवा दाम्र बन कर लोगों की बहुत भलाई की। उस सत्यवादी लड़के का नाम था गोपालकृष्ण गोखले।

छतरपूर में शंकरलाल जी का एक छोटा सा मकान था। लेकिन उसके पिछवाड़े की बाड़ी काफी बड़ी थी। उस बाड़ी में बहुत से छोटे-मोटे टीले बन गए थे और चारों ओर तरह-तरह की कँटीली झाड़ियाँ उग आई थीं। अचानक देखने से एक छोटा-मोटा जंगल सा लगता था। यहाँ तक कि दिन में भी उन झाड़ियों के नीचे अँधेरा ही छाया रहता था। फिर उस बाड़ी में विषैले जीव-जंतु आराम से विचरने लगे तो इसमें आश्चर्य की कौन सी बात! हितैषी पड़ोसियों ने बार बार शंकरलाल जी से कहा—'भाई शंकर! बाड़ी में बाल-बच्चे घूमते-फिरते हैं। इसलिए रुपए का लोभ न करके तुरंत बाड़ी को साफ करा दो। खाई-खड्डों को पटवा दो! दीवारों की मरम्मत करा दो! पीछे पछताने से क्या फायदा होगा!' लेकिन उनकी बात शंकरलाल ने सुनी-अनसुनी कर दी। आखिर पड़ोसी चुप हो रहे। एक दिन शंकरलाल के घर में सभी लोग खाने बैठे। उसी समय पानी की मोरी में से एक छोटा मेंढ़क लंबी छलाँगें भरता अंदर आ गया। बच्चे उसका तमाशा देखने लगे। इतने में उसी मोरी में से एक साँप भी अंदर आ गया। उसने पल भर में मेंढ़क को पकड़ लिया। बस; परोसा हुआ हुआ खाना छोड़ कर घर के सभी लोग उठ भागे। सब लोग तो भाग कर बाहर चले गए; लेकिन शंकरलाल कमरे के बाहर से झाँक कर देखने लगे कि साँप क्या करता है। उस कमरे में शायद साँप के लिए कोई दूसरा रास्ता न था। इसलिए वह

रघुवर सिंह

मेंढ़क को पकड़ कर जिस रास्ते से आया था उसी से चला गया। शंकरलाल ने उसका पीछा किया। उन्होंने देखा कि वह बाड़ी में जाकर दीवार की एक दरार में घुस गया। इतने में बच्चे बाहर जाकर हल्ला मचाने लगे और दस-बीस आदमी आकर जमा हो गए। 'भाई! तुम लोग यहीं पहरा देते रहो! साँप कहीं बाहर न आ जाए! मैं अभी जाकर सँपेरे को बुला लाता हूँ।' यह कह कर शंकरलाल तुरंत बेचू सँपेरा के घर चले। वह गाँव के बाहर एक छोटी सी झोंपड़ी में रहता था। शंकरलाल के सौभाग्य से आज वह घर पर ही था। 'बेचू! आ जल्दी! हमारी जान पर आ बनी है! बड़ा भारी साँप आ गया है हमारे घर में!' शंकरलाल ने हाँफते हुए कहा। 'बाबूजी! घबराइए नहीं! मेरे होते आपको डर किस बात का! हाँ, यह बताइए कि वह कौन सा साँप है! उसके बदन पर धारियाँ हैं कि धब्बे हैं!' बेचू सँपेरा अनेकों सवाल करने लगा। 'समय बर्बाद मत करो! जल्दी चलो!' शंकरलाल ने उतावली के साथ कहा। 'कहने का मतलब है कि बाबूजी! मैं तूँबी बजाऊँगा। मंतर-तंतर करूँगा। तब साँप बाहर आएँगे। जितने साँप बाहर आएँगे उतनी चवन्नियाँ लूँगा। अगर यह सब करने पर भी आपका बताया साँप बाहर नहीं निकला तो एक ही चवन्नी दीजिएगा, बस।' बेचू सँपेरे ने कहा। शंकरलाल ने साँप को अच्छी तरह पहचान लिया था। इसलिए उन्हें उसकी निशानियाँ याद थीं। अब वे

सोचने लगे कि न जाने, बेचू के तूँबी बजाने पर कितने साँप बाहर आएँगे और उसे कितनी चवन्नियाँ देनी पड़ेंगी। अगर उनका देखा साँप बाहर नहीं आया तो! इस उधेड़-बुन में पड़े कुछ देर तक वे किसी निश्चय पर न आ सके। लेकिन आखिर उन्होंने बेचू के सामने अपने देखे हुए साँप का वर्णन करके बताया। तुरंत बेचू उनके साथ चला। उनके घर जाकर उसने तूँबी बजाई। तुरंत छः सात काले साँप बाहर निकल आए। लेकिन उनमें शंकरलाल का बताया साँप नहीं था। बेचू ने उन साँपों को पकड़ कर अपनी टोकरी में बंद कर लिया और फिर तूँबी बजाई। लेकिन उसके लाख कोशिश करने पर भी शंकरलाल का बताया हुआ साँप बाहर नहीं आया। तब शंकरलाल को बहुत खुशी होने लगी कि एक चवन्नी देने से उनका पिंड छूट जाएगा! उन्होंने बेचू को एक चवन्नी देकर जाने को कहा। 'तीन बरस से साँप पकड़ना ही मेरा पेशा है। लेकिन कभी मेरी कोशिश बेकार नहीं गई। इस बार ऐसा क्यों हुआ?' बेचू ने सोचा। आखिर उसने सोचा कि शंकरलाल ने ही पैसा बचाने के लिए यह चाल चली है। वे ही झूठ बोल रहे हैं। आखिर चवन्नी लेकर जाते वक्त बेचू ने शंकरलाल से कहा—'तुमने मुझे धोखा दिया है। इसका नतीजा अच्छा न होगा। तुम सोचते होगे कि साँपों में समझ नहीं है। लेकिन सुन लो! उनके बारे में झूठ बोल कर किसी ने फायदा नहीं उठाया। हमारे साँप कभी धोखे-बाजों को माफ नहीं करते। वे अपकार को भूलते भी नहीं। तुम थोड़े ही दिनों में अपने पाप का फल भोगोगे!' यह कह कर वह गुस्से

में चला गया। 'वा! बच्चू! हमने ऐसे बहुतेरे देखे हैं।' शंकर लाल ने मन में कहा। लेकिन दूसरे दिन शंकरलाल के घरवालों ने देखा कि दो काले साँप फुफकारते हुए वेग से आकर उनकी गाड़ी में फन उठा कर नाच रहे हैं। यह देख कर उनकी घबराहट का ठिकाना न रहा। अब क्या किया जाय? आखिर शंकरलाल जाकर बेचू के पास गिड़गिड़ाने लगे। 'अभी मुझे एक और जगह जाना है। वहाँ मुझे पाँच रुपए मिलेंगे। मैं अभी नहीं आ सकता।' बेचू ने मुँह फुला कर कहा। आखिर शंकरलाल ने उसे पाँच रुपए दिए और बड़ी आरजू-मिन्नत करके उसे अपने घर ले आए। बेचू ने आकर उन साँपों को पकड़ लिया। इसके एक हफ्ते बाद शंकरलाल के दोस्त रामचरण उनके घर आए। तब घरवालों ने साँपों का वृत्तांत जो अभी अभी उनकी याद में ताजा था, उनसे कह सुनाया। सारी कहानी ध्यान से सुनने के बाद रामचरण ठहाका मार कर हँसने लगे। शंकरलाल की समझ में न आया कि वे क्यों हँस रहे हैं? आखिर रामचरण ने कहा—'शंकरलाल! तुम बिलकुल भोले मालूम होते हो। इतने दिनों से यहाँ रह कर भी बेचू सँपेरा का रहस्य नहीं जाना तुमने? सुनो! वह जितना रुपया माँगता है उतना कुछ लोग नहीं देते। तब वह उनकी गाड़ियों में अपने पालतू साँप छोड़ देता है। शायद तुम नहीं जानते हो! उन सब का जहर पहले ही निकाल लिया जाता है! इसलिए उनके डसने पर भी कोई खतरा नहीं। फिर भी उन्हें देखकर लोग डर ही जाते हैं। क्या तुमसे भी बेचू का झगड़ा हुआ था क्या?' यह कह कर उन्होंने शंकरलाल की खिल्ली उड़ाई। शंकरलाल उनकी बात सुन कर बहुत शरमा गए। उन्होंने तुरंत बात बदल डाली।

7

[उदय, निशीथ और प्रदोष किस तरह दाढ़ी वाले बौने के फंदे में फँस गए, फिर संयोग से किस तरह उदय ने दाढ़ी वाले का रहस्य जान लिया, यह आपने पिछले अंक में पढ़ लिया। अब आगे पढ़िए !]

हम पहले ही कह चुके हैं कि निशीथ और प्रदोष को दिन में नहीं दिखाई देता था। तिस पर वे अब दाढ़ी वाले बौने की माया में फँसे हुए थे। इसलिए वे उदय के बौने बन जाने और बौने के मामूली आदमी बन कर चारपाई पर लेटने की बात नहीं जान सके। वे बहुत घबरा रहे थे कि दाढ़ी वाला न जाने कब जाग उठेगा और कब उनकी जान पर आ बनेगी ! फिर उदय की चिंता भी थी ! इधर उदय खुश हो रहा था कि दाढ़ी वाले बौने का सारा रहस्य उसे मालूम हो गया। इतना ही नहीं, वह चकमा देकर खुद दाढ़ी वाला बन गया। इस खुशी में उदय अपने भाइयों की बात ही भूल गया था। अब तो उसका सारा ध्यान उन अंजनों पर लगा था जो उसकी जेब में थे। वह सोच रहा था कि वह उन बुकनियों और अंजनों का क्या उपयोग कर सकता है कि इतने में उसे अपने भाइयों की याद आ गई। उसने चारों ओर नजर फेरी कि वे कहाँ हैं ! उसे कुछ नहीं सूझा। वह कुछ सोचते हुए वहाँ चहल-कदमी करने लगा। इतने

में बौने की नींद टूट गई। उसने देखा कि सामने ठीक उसी का सा रूप बना कर उदय खड़ा है। हाँ, उसका एक हाथ गायब है। तब सारी बात उसकी समझ में आ गई। उसे बहुत गुस्सा आया कि उसका सारा भंडा फूट गया। लेकिन ऊपर से उसने कुछ न दिखाया। 'आप बड़े ही बहादुर मालूम होते हैं। मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि आज इतने दिन बाद ऐसे चतुर वीर दिखाई दिए जो बात की बात में मेरा रहस्य जान गए। लेकिन इससे आपको कोई फायदा न होगा। अगर आप मुझे बता दें कि किस काम पर निकले हैं तो मैं ही वह काम कर दूंगा। मेरे रहते आप बेकार कष्ट क्यों उठाएँ!' उदय के नजदीक आकर उसने कहा और गिड़गिड़ा कर उसके गले की माला माँगने लगा। लेकिन उदय क्यों उसकी चाल में आने लगा! उसने कहा—'पहले बता दो कि मेरे भाइयों को कहाँ छिपा रखा है! पीछे बातें होती रहेंगी!'

'मैंने उन्हें कहीं नहीं छिपाया है। वे यहीं हैं। तुम्हें विश्वास न हो तो अपनी बाईं जेब से बुकनी की डिबिया निकाल कर यहाँ छिड़क कर देखो!' यह कह कर उसने एक जगह बतलाई। उदय ने बुकनी निकाल कर बताई हुई जगह पर छिड़क दी। तुरंत उसे निरोध और प्रदोष दिखाई दिए। 'हाँ, अब बताओ कि मेरा हाथ जो गायब हो गया है फिर से कैसे मिलेगा!' उदय ने बौने से पूछा। 'उसकी दवा भी तुम्हारे ही पास है। अपनी दाईं जेब से हरे अंजन की डिबिया निकाल लो। थोड़ा सा अंजन अपनी बाँह पर मल लो!' दाढ़ी वाले ने कहा। उदय ने वैसे ही किया।

तुरंत उसका हाथ फिर उसे मिल गया। तब उसने सोचा—'अब मुझे जान लेना चाहिए कि मेरी जेब में जो सफ़ेद बुकनी और हरा अंजन है वे किस काम आते हैं!' उसने उन्हें दाढ़ी वाले को दिखा कर पूछा। 'क्या तुम इतना भी नहीं जान सके! उसी सफ़ेद बुकनी से मैंने तुम्हारे भाइयों को अदृश्य किया था। उसी लाल अंजन से मैंने तुम्हारा हाथ गायब कर दिया था।' दाढ़ी वाले बौने ने हँसते हुए जवाब दिया। 'तो फिर यह तौलिया किस काम आता है!' उदय ने पूछा। 'उसके दो उपयोग हैं। एक तो तुम उसे बिछा कर जिस तरह का खाना चाहो तुरंत उस पर आ जाएगा। दूसरे वह किसी भी तरह की बीमारी क्यों न हो, दूर कर देगा।' दाढ़ी वाले ने बताया। 'तब हम तीनों को जो दृष्टि-दोष है क्या उसे तौलिया दूर कर सकता है!' उदय ने फिर पूछा। 'दृष्टि-दोष! कैसा दृष्टि-दोष!' बौने ने अचरज के साथ पूछा। तब उदय ने बताया कि उसे रात में नहीं दिखाई देता और निशीथ को रात और प्रदोष को दोनों साँझों के अलावा किसी वक्त नहीं दिखाई देता। तब सारी बात बौने की समझ में आ गई। उसने कहा—'अच्छा, मैं तुम लोगों को ऐसा उपाय बता दूँगा जिससे सारा दृष्टि-दोष दूर हो जाए। लेकिन पहले मेरी माला मुझे दे दो!' लेकिन उदय वैसा बुद्धू नहीं था। उसे मालूम था कि वह एक बार बौने के चंगुल में फँस जाएगा तो फिर छुटकारा नहीं मिलेगा। इसलिए उसने चालाकी के साथ कहा—'पहले हमें वह उपाय बता दो जिससे हमारा दृष्टि-दोष दूर हो जाए! इसके अलावा हम और कुछ नहीं चाहते।

तुम हमें वह उपाय बता दोगे तो इस माला को हम यहाँ से पश्चिम की ओर, दस मील की दूरी पर जो एक खोह है, उसमें रख कर चले जाएँगे। तुम हमारे पीछे पीछे आकर उस को उठा लेना!' उस माला के बिना बौने का काम नहीं चल सकता था। इसलिए लाचार होकर उसे उदय की बात माननी पड़ी। इतने में निशीथ और प्रदोष ने कहा—'भैया! इसके कारण अब तक हमें भूखा ही रहना पड़ा। पेट में चूहे दौड़ रहे हैं! निकालो न वह तौलिया! जरा उसकी परीक्षा हो जाए!' सच पूछा जाय तो उदय को उस तौलिए की बात याद न थी। भाई की बात सुनते ही उदय ने तरह तरह की खाने की चीज़ों को मन में याद किया और तौलिया ज़मीन पर बिछाया। तुरंत उसकी याद की हुई चीज़ें तौलिए पर आ गईं। तीनों भाइयों ने खूब छक कर खाया। लेकिन तौलिए पर की चीज़ें ज्यों की त्यों रहीं। उन्होंने दाढ़ी वाले को भी न्यौता दिया। उसने भी भर पेट खाया। इस तरह पेट भरने के बाद उदय ने तौलिया उठा कर जेब में रख लिया और दाढ़ी वाले से कहा—'अब हमें वह उपाय बता दो जिससे हमारी आँखें चंगी हो जाएँ। क्योंकि हमें जल्दी ही अपनी राह पकड़नी है।' तब दाढ़ी वाले ने कहा—'तुम्हारे पास जो लाल अंजन है उसकी एक गोली बना लो। उस गोली को सन के रेशों से लपेट कर सुलगा दो। उससे खूब धुँआ निकलने लगेगा। तब तुम तीनों भाई इस तौलिए को सिर पर ओढ़ कर इस तरह बैठ जाओ जिससे धुँआ सीधे तुम लोगों की आँखों में चला जाए। पाँच मिनट उस तरह

उड़ने को तैयार हैं ! क्या मैं इनमें जान डाल दूं ! ! यह सोच कर उन्होंने उनमें जान डाल दी। बस, कलाधर के सौ तोते पंख फड़फड़ा कर उड़ गये। तोतों को यों उड़ते देख कर कलाधर को अचरज भी हुआ और साथ साथ भारी दुख भी। किसी तरह अनेक कष्ट उठा कर उसने छः समुंदर पार कर लिए। सातवें समुंदर में जाते ही और एक तूफान उठा और उसका जहाज टुकड़े टुकड़े हो गया। लेकिन कलाधर किसी तरह किनारे पहुँच गया। किनारे पहुँचने पर उसने पूछ-ताछ की तो पता चला कि वही नवद्वीप है। वह फूला न समाया। सीधे राजा के दरबार में पहुँचा। कलाधर की सुंदरता देख कर राजा का मन भी पिघल गया। उसने उसे अपनी लड़की के प्रण की बात बताई। उसने कहा—'अनेक शूर-वीर इसी कोशिश में अपने प्राणों से हाथ धो बैठे हैं। इसलिये सीधे घर लौट जाना ही अच्छा है।'

'लेकिन संसार में कोई ऐसा काम नहीं है जो मैं नहीं कर सकता। मैं अपनी सामर्थ्य जानता हूँ।' कलाधर ने कहा। तब किले के द्वारपाल ने फाटक खोल कर उसे अन्दर जाने दिया। अन्दर सारी जगह निर्जन थी। थोड़ी दूर पर एक खाई थी जिसमें कुछ नहीं था। साहसी कलाधर ने उसे आसानी से पार कर लिया। थोड़ी दूर जाने पर उसी तरह की और एक खाई मिली। इसमें दहकते हुए अंगारे भरे थे। लेकिन कलाधर ने इसे भी पार कर लिया। तीसरी खाई में पानी भरा था और प्रवाह बड़ा तेज था।

कलाधर ने छलाँग मार कर पार जाना चाहा; लेकिन वह बीच खाई में ही गिर पड़ा। उस खाई की दीवारें बहुत चिकनी थीं। इसलिए उसे कहीं कोई सहारा नहीं मिल रहा था। बेचारा ऊपर नहीं आ सकता था। लाचार वह उसी तरह पानी पर तैरता रहा। थोड़ी देर बाद वह इतना थक गया कि हाथ-पैर ढीले पड़ गए। इतने में बहुत से तोते उड़ते हुए आए और उन्होंने एक डाल तोड़ कर पानी में गिरा दी। कलाधर उस डाल पर आराम से बैठ गया और डूबने से बच गया।

फिर वही तोते एक रस्सी ले आये। उस रस्सी का एक छोर उन्होंने किनारे के पेड़ से बाँध दिया और दूसरा छोर खाई में छोड़ दिया। बस! रस्सी पकड़ कर कलाधर किनारे आ गया। वहाँ उसकी भूख मिटाने के लिए अच्छे-अच्छे फल पड़े थे। थोड़ी देर आराम करने के बाद कलाधर ने उठ कर देखा तो मालूम हुआ कि वे तोते उसी के बनाये हुए काठ के तोते थे और वह रस्सी उसी के जहाज की रस्सी थी। इतने में देखते ही देखते तोते उड़ गए। अपने भाग्य को सराहता हुआ कलाधर आगे बढ़ चला। आगे जो खाइयाँ थीं वे एक से एक भयानक थीं। चौथी खाई में भयंकर साँप थे। वे फुफकार छोड़ते ज़हर उगल रहे थे। कलाधर ने इसे भी पार कर लिया। पाँचवीं खाई में भूखे शेर और तरह तरह के जंगली जानवर गरज रहे थे। कलाधर ने साहस के साथ उसे भी पार कर लिया। छठी खाई में मनुष्य-भक्षी मगर और भयंकर जलचर मुँह फाड़े उसकी

राह देख रहे थे। लेकिन किसी तरह उनकी बला भी टल गई। इस तरह उसने छः खाइयाँ पार कर लीं; और एक ही बच रही थी। इसे भी पार कर लेने पर वह सीधे महल में पहुँच जाता और राजकुमारी उसे मिल जाती। 'मैंने छः खाइयाँ तो पार कर लीं। अब सातवीं खाई पार करने में कितनी देर लगती है!' यह सोच कर कलाधर हिम्मत से आगे बढ़ गया। आखिर सातवीं खाई भी दिखाई दी। उस खाई में पैनी बरछियाँ गड़ी हुई थीं। कलाधर ने सोचा—'यह तो आसानी से पार कर जाऊँगा।' यह सोच कर उसने छलाँग मारी। लेकिन पैर फिसल गया और वह खाई में आ गिरा। फिर तो बरछियों से छिद कर जान छोड़ने में ज्यादा देर न लगी। तब तक कलाधर को वहाँ आए सात दिन हो गये थे। राजा ने सोचा—'ज़रा जाकर देखें, उसकी क्या हालत है!' सातवीं खाई के पास आकर राजा ने देखा कि कलाधर की लाश उसमें पड़ी है और

बहुत से तोते शोक से उसके ऊपर मँडरा रहे हैं। यह देख कर राजा को बहुत दुख हुआ। उसने सोचा—'इन मासूम तोतों के हृदय में जितनी दया है, उतनी मेरी लड़की के हृदय में नहीं। उसी के कारण तो इस राजकुमार की जान गई! अब आगे से ऐसा नहीं होने देना चाहिए। या तो वह अपना प्रण तोड़ेगी या मैं उसका वध करूँगा।' यह सोच कर गुस्से से भरा हुआ राजा सीधे अपनी लड़की के पास गया और बोला—'तू नहीं जानती कि तेरे कारण कितने लोग अपनी जान से हाथ

खो बैठे हैं ! या तो आज से तू अपना प्रण छोड़ या अपने प्राणों से हाथ धो ले। क्यों था, तेरे हठ के कारण कितना सुंदर राजकुमार बलि हो गया है मेरे साथ चल कर देख।' यह कह कर वह उसे घसीटता हुआ सातवीं खाई के पास ले गया। वहाँ जाकर राजा ने देखा तो आश्चर्य में पड़ गया। कुछ तोते कलाधर की छाती पर बैठ कर जड़ी-बूटियों का रस उसके मुँह में टपका रहे थे। और कुछ तोते उस रस को सभी घावों पर मल रहे थे; और कुछ तोते अच्छे अच्छे फल अपनी चोंचों में लिये तैयार बैठे थे। इतने में कलाधर हिलने-डुलने लगा। धीरे धीरे उसकी आँखें खुलीं। तब राजकुमारी ने अपने पिता के पैरों पर गिर कर माफी माँगी। राजा की आज्ञा पाकर राज-वैद्य दौड़े आये। उन्होंने कलाधर की चिकित्सा की। बहुत से नौकर-चाकर आकर सेवा शुश्रूषा करने लगे। थोड़ा सा आराम होते ही राजा उसे किले में ले गया। तोते भी उसके साथ गये। कुछ दिनों में कलाधर के सभी घाव भर गये। वह पूरी तरह चंगा हो गया। तब बड़ी धूम-धाम से राजकुमारी के साथ उसका ब्याह हुआ। प्राण देने वाले उन तोतों के लिए सोने के सौ पिंजड़े बनाए गए। राजकुमार ने उन तोतों को पिंजड़ों में रखा और उनके लिये सब तरह की सहूलियतें कर दीं। लेकिन जब दूसरे दिन उन पिंजड़ों के दरवाज़े खोल कर देखा गया तो मालूम हुआ कि उनमें जीते-जागते तोते नहीं, बल्कि उसी के बनाए ये काठ के तोते हैं।

गोदावरी-तीर के एक गाँव में ज़्यादातर वैश्य लोगों के घर थे। उन में कुसुम सेठ सब से धनवान, दानी और सज्जन पुरुष थे। उनकी स्त्री कुसुम बाई भी धर्म-कर्म में बहुत श्रद्धा रखती थी। इस कारण से उन दंपति के प्रति सभी वैश्य बड़ा आदर-भाव रखते थे। कुसुम सेठ को किसी चीज़ की कमी न थी; लेकिन संतान के अभाव से वे बहुत चिंतित रहते थे। संतान के लिये पति-पत्नी ने बहुत से पूजा-पाठ किए; अनेकों तीर्थों की यात्रा की। लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ। आखिर पंडितों-पुरोहितों ने उस सेठ को सलाह दी कि अगर तुम पुत्र-कामेष्ठी यज्ञ करोगे तो तुम्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। उनकी सलाह के अनुसार सेठ ने तुरंत यज्ञ की तैयारियाँ शुरू कर दीं। अत्यंत भक्ति-भाव के साथ जब उन लोगों ने यज्ञ पूरा किया तो हवन-कुण्ड में से अग्नि-देव ने प्रत्यक्ष होकर कुछ फल दिए। उन फलों को कुसुम बाई ने बड़े प्रेम से खाया। कुछ ही दिनों में वह गर्भवती हो गई। और कुछ दिन बाद देवी की कृपा से उसकी कोख से दो अत्यंत सुंदर जुड़वें बच्चे पैदा हुए। उनमें से एक लड़का था और एक लड़की। लड़की का वासवांबिका और लड़के का विरूपाक्ष नाम रख कर माँ-बाप उन दोनों को बड़े लाड़-प्यार से पालने लगे। देवता के वर-प्रभाव से पैदा होने के कारण वे दोनों बच्चे कुछ ही दिनों में सब विद्याएँ सीख कर बड़े हो गये। उन दिनों वेंगी देश पर विष्णुवर्धन विमलादित्य

फलम कुमार

का राज था। तब वेंगी देश की राजधानी थी राजमन्द्री। एक बार इस विमलादित्य ने कलिंग देश पर चढ़ाई करके उसे जीत लिया; लेकिन कुछ दिन बाद कलिंग-राज ने फिर सेना एकत्र करके लड़ाई की और विमलादित्य को हराया। इन लड़ाइयों के कारण उस समय वेंगी देश में बहुत उत्पात होने लगे। जगह जगह बगावत हो रही थी। उन बागियों को दबाने के लिए विमलादित्य अपने सामन्त कुब्ज-वर्मा, सेना पति नृपकाम और अमात्य बिज्जी को साथ लेकर राज में घूमने लगे। घूमते घूमते एक बार उन्होंने कुसुम सेठ के गाँव के नज़दीक डेरा डाला। राजा को आया सुन कर गाँव के वैश्यों ने उनके दर्शनों के लिए तैयारी की और अनेक सत्कार करके अपने गाँव में उनका स्वागत किया। वे सभी बहुत धनवान थे। इसलिये उनके स्वागत का कहना ही क्या था! उन्होंने गाँव में बड़ी धूम-धाम से राजा का जुलूस निकाला। जुलूस चारों ओर घूम कर गाँव के चौपाल पर पहुँचा। वहाँ वैश्य-रमणियों ने बड़ी सज-धज के साथ महाराज की आरती उतारी। उनके सत्कार से विमलादित्य को बहुत आनंद हुआ। उन्होंने कहा—'हम इस गाँव की पतिव्रताओं का गौरव करने के ख्याल से उनमें सर्व-सम्मानित महिला को एक पान का बीड़ा देना चाहते हैं। अब आप ही बताएँ, वह बीड़ा किसको दिया जाय!' तब एक बूढ़ी औरत ने उठ कर कहा—'हुज़ूर, देवी कुसुम बाई ही हमारे कुल की रमणियों में सबसे

श्रेष्ठ है। इसलिये पहले उसे ही बीड़ा दीजिए।' यह कह कर उसने कुसुम बाई की ओर इशारा किया। राजा के आज्ञानुसार बीड़ा लेने के लिए कुसुम बाई आगे बढ़ी। राजा उसको बीड़ा दे रहे थे कि इतने में उनकी नज़र बगल में खड़ी वासवी पर पड़ी। उसका रूप देखते ही वे मुग्ध हो गए। राजा ने अपने खेमे में लौटने के बाद मंत्री द्वारा कुसुम सेठ को खबर भेजी कि वे वासवी को अपनी रानी बनाना चाहते हैं। यह खबर सुनते ही कुसुम सेठ पर मानों बिजली टूट पड़ी। उसने कहा—'राजा क्षत्रिय हैं और हम वैश्य। हम दोनों के बीच शादी-ब्याह कैसे हो सकता है? हमारे कुल के लोग ऐसी बात कैसे मानेंगे? वे राजा हैं तो हम उनकी संतान हैं। ऐसी बुरी भावना उनके मन में कैसे पैदा हुई!' यह सुन कर मंत्री ने क्रुद्ध होकर कहा—'सेठ! तुम राजाज्ञा को क्या समझते हो? सोच-विचार लो! तुम इनकार करोगे तो वे तुम्हारा गाँव लूट कर जबरदस्ती तुम्हारी लड़की को छीन ले जा सकते हैं। अच्छी तरह सोच लो!' यह कह कर वे चले गए। यह खबर बिजली की तरह सारे गाँव में फैल गई। वैश्य लोग सब एक जगह जमा हुए। 'हम नहीं जानते थे कि राजा इतना दुष्ट है! हमने उसे गाँव में क्या बुलाया कि अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। बड़ा कृतघ्न मालूम होता है यह राजा!' उन्होंने सोचा। आखिर उन्होंने राजा के पास खबर भेजी कि कुल-धर्म का अतिक्रमण करना अच्छा नहीं। लेकिन

राजा ने इसकी कुछ परवाह नहीं की। आखिर राजा से डर कर उस गाँव के वैश्यों ने झूठ-मूठ की स्वीकृति दे दी और अपने सिर की बला टाली। ब्याह की तैयारियों के लिये उन्होंने कुछ समय माँगा और किसी तरह राजा को उस गाँव से भेज दिया। राजा के जाने के बाद कुसुम सेठ ने दूर दूर के गाँवों में रहने वाले अपने सभी रिश्तेदारों को बुलाया। सारी हालत उन्हें बताने के बाद उसने पूछा कि अब क्या किया जाय! तीव्र वाद-विवाद होने लगे। उनमें से कुछ ने सीधे राजमहल में राजा के पास जाकर उनसे विनती की—'महाराज! वैश्यों और क्षत्रियों के बीच विवाह धर्म-विरुद्ध है। यह किसी ने आज तक न देखा, न सुना। इसलिए हुजूर कृपा करके अपना निश्चय बदल डालें।' लेकिन मूर्ख के जिद्दी मन को कौन बदल सकता है! राजा ने त्यौरियाँ चढ़ा कर कहा—'हमारा हुक्म टाला नहीं जा सकता। हमारी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारे कुल का समूल-नाश होगा।' यह कह कर उसने कुछ सिपाहियों को कुसुम सेठ के गाँव पर पहरा देने के लिये भेज दिया। यह गड़बड़ी देख कर वैश्यों के सभी मुखिया घर-बार छोड़ कर, जान मुट्ठी में लेकर भाग गए। लेकिन कुछ लोग जो साहसी थे वहीं रह गये और देखने लगे कि अब राजा क्या करता है। इस हालत में वासवी ने अपने पिता के पास जाकर कहा—'पिताजी! आप मेरे बारे में कुछ भी चिंता न कीजिए। आप यह न सोचिए कि मेरे कारण आपके वंश या परिवार पर कलंक का टीका लगेगा।

अभी राजा को खबर दीजिए कि हम इस विवाह के लिए राजी हैं और जल्दी बारात लेकर आप आ जाइए।' पिता ने उसकी बात अचरज के साथ सुनी। लेकिन यह नहीं पूछा कि तुम ऐसा क्यों कर रही हो। उसे अपनी लड़की पर पूर्ण-विश्वास था। दूसरे दिन कुसुम सेठ ने राजा के पास खबर भेज दी कि वह राजी है। ब्याह का दिन ठीक हो गया। गाँव में एक विवाह-मण्डप बनाया गया। चारों ओर खेमे गड़ गए। सज-धज का तो कहना ही क्या था! सब जगह मोतियों की झालरें लटक रही थीं। बंदनवार झूल रहे थे। उस मण्डप के बीचों-बीच हवन-कुण्ड बनाया गया। उस सजे हुए मण्डप में राजा के असंख्य परिजन और अमूल्य वस्त्र पहने हुए बन्धु-बान्धव बैठे हुए थे। उस दिन वासवी ने अभ्यंजन-स्नान करके सिंदूरी रंग की साड़ी पहन ली थी। मुख पर तिलक लगा था। बदन पर चन्दन का लेप था। वाद्य-यंत्रों के कोलाहल के बीच वह मण्डप के पास आ खड़ी हुई। सब लोग राजा से वासवी के विवाह की बात सुन कर चकित हो रहे थे। किसी को नहीं मालूम था कि वह मन में क्या सोच रही है। यहाँ तक कि उसके माता-पिता भी उसके मन की बात नहीं जान सके थे। फिर दूसरों का कहना ही क्या! आखिर राजा भी दरबारियों के साथ मण्डप में पधारे। वहाँ की सजावट देख कर उन्हें बहुत खुशी हुई। इतने में वासवी ने राजा के पास जाकर कहा—'राजन्! हमारे कुल का आचार है कि वर

और वधू तीन बार हवन-कुण्ड की प्रदक्षिणा करके, तब देवता के मंदिर में जाकर ब्याह करते हैं।" राजा ने बड़ी खुशी से उसकी बात मान ली। वासवी ने अपने माता-पिता, गुरुजनों और ब्राह्मणों को नमस्कार किया। राजा आगे-आगे और वह पीछे-पीछे प्रदक्षिणा करने लगे। बाजे-गाजों का कोलाहल आसमान में गूँजने लगा। एक प्रदक्षिणा हुई। दूसरी भी हो गई। लेकिन तीसरी पूरी होने के पहले ही धू-धू करके जलती हुई आग में वासवी कूद पड़ी। अग्नि-देवता प्रत्यक्ष हुए और अपनी लाड़ली बिटिया को फिर अपनी गोदी में उठा ले गए। हजारों लोग एकटक उत्सुकता के साथ तमाशा देख रहे थे। वे हठात् फूट-फूट कर रोने लगे।

उनका शोक देख कर विमलादित्य ने सोचा–'अब खैर नहीं।' उसने वहाँ से भाग कर जान बचाने की कोशिश की। लेकिन देवी के शाप से राह में ही उसका सिर टूक-टूक हो गया। अपनी प्यारी बेटी के शोक में कुसुम सेठ और उसकी पत्नी ने भी जलती लपटों में कूद कर जान दे दी। इस भयंकर दुर्घटना से विचलित होकर वैश्यों के अभिमानी मुखियाओं ने भी वासवी का ही अनुसरण किया। इस तरह कुल-गौरव की रक्षा के लिए प्राण-त्याग करके वासवी ने वैश्य-कुल के यश को उज्वल कर दिया। इसलिए उस दिन से वह उनकी कुल-देवी बन गई। वासवी-कन्यका परमेश्वरी के नाम से आज भी जगह-जगह उसी की उपासना होती है।

बुलन्दपुर में धरमू नाम का एक गुड़ का व्यापारी रहता था। नाम तो धरमू था; लेकिन था वह बड़ा कंजूस। हाँ, उसकी पत्नी बड़ी पतिव्रता थी। वह भिखमंगों को भीख दिए बिना नहीं लौटाती थी। उसके मुँह से कभी 'नहीं' न निकलता था। 'जितने लोग आते हैं सबको भीख दोगी तो थोड़े ही दिन में हमारा दिवाला निकल जाएगा।' धरमू अपनी पत्नी से कहता। 'नहीं; भिखमंगों को भीख देने से हमारे घर की संपदा और भी बढ़ेगी!' उसकी पत्नी जवाब देती। इस तरह दोनों के बीच हमेशा चख-चख चलती रहती थी। आखिर किसी तरह दोनों के बीच एक समझौता हुआ। उसके अनुसार धरमू की पत्नी को रोज एक भिखमंगे को एक मुट्ठी भर ही चावल देना था। इससे ज्यादा नहीं दे सकती थी। धरमू की पत्नी ने सोचा—'चलो; कम से कम एक को भीख देने की इजाजत तो मिल गई!' दूसरे दिन से वह मुट्ठी में अच्छी तरह चावल भर कर एक ही भिखमंगे को देने लगी। वह चावल कम से कम पाव सेर होते। वह मन में यह सोच कर संतोष कर लेती कि चलो, एक गरीब तो आज खाली पेट नहीं रहेगा! यों कुछ दिन बीत गए। धरमू की बहू ससुराल आ गई। उसकी उम्र ज्यादा न थी। उसे देखते ही धरमू को एक बात सूझी। उसने पत्नी को पुकार कर कहा—'अजी! जरा इधर तो आना! हाँ; आज से बहू को ही भीख देने का काम सौंप

चंद्राणी देवी

दो। नन्हें हाथों से नई बहू को भीख डालते देख कर भिखमंगों को भी खुशी होगी और लोग भी उसकी बड़ाई करेंगे।' घरमू की यह बात सुन कर उसकी पत्नी को बहुत खुशी हुई। बेचारी को भान भी न हुआ कि उसकी बातों में कौन सी चाल छिपी थी। उसकी बुद्धि इतनी दूर जाती भी न थी। इतने में गुड़ का सौदा करने के लिए घरमू को गाँव से बाहर जाना पड़ा। ससुर की इच्छा के अनुसार ही बहू दूसरे दिन से भीख डालने लगी। लेकिन भीख डालने के बारे में सास और ससुर में जो समझौता हुआ था उसका पता उसे नहीं था। इसलिए वह बोरा खोल कर बैठ जाती और जितने लोग आते सबको भीख देती जाती थी।

अब आपके मन में शक उठेगा कि लोभी घरमू ने बहू को भीख देने को क्यों कहा! क्या उसका मन बदल गया था? नहीं; इसमें एक रहस्य छिपा हुआ था। घरमू की पत्नी के हाथ बड़े बड़े थे। तिस पर वह मुट्ठी भर कर भीख देती थी। इसलिए एक आदमी को भीख देने पर पाव सेर चावल चला जाता था। हाँ, घरमू ने सोचा कि इसके हाथों से भीख देने का काम छुड़ाया जाय तो चावल की बचत होगी। वह सोचने लगा कि यह कैसे होगा? बहू के आते ही घरमू की सारी चिंता दूर हो गई। क्योंकि बहू छोटी थी। उसके हाथ नन्हे से थे। उसकी मुट्ठी में पाव सेर चावल कभी न आते। इस तरह बड़ी बचत होती थी। यही सोच कर घरमू

ने अपनी पत्नी को सुझाया कि भीख देने का काम बहू को सौंप दिया जाय। उसकी भोली-भाली पत्नी ने तुरंत उसकी बात मान ली थी। धरमू को बड़ी खुशी हुई कि उसकी पत्नी ने उसकी बात मान ली। लेकिन इस खुशी में गाँव से बाहर जाते वक्त वह बहू से यह कहना भूल ही गया कि रोज एक ही भिखमंगे को भीख देनी होगी। बेचारी बहू क्या जाने कि उसके ससुर कैसे कंजूस हैं। इसलिए वह जितने भिखमंगे आए, सबको अपने नन्हे हाथों से भीख देती गई। धरमू के घर भीख देने के नियम में यह परिवर्तन देख कर सिर्फ उसी गाँव के नहीं, आस-पड़ोस के गाँवों के भिखमंगे भी उस घर के सामने कतार बाँध कर खड़े होने लगे। तीन चार दिन बाद धरमू काम पूरा करके घर लौट आया। आते ही उसने देखा कि घर के सामने भिखमंगे कतार बाँध कर खड़े हैं। वे उसकी बहू के गुण गा रहे हैं और उसकी बहू सबको भीख देती जाती है। यह देखते ही लोभी धरमू का कलेजा फट गया। देखने पर मालूम हुआ कि एक बोरा सारा खाली हो गया है। अब पछताने से क्या फायदा था! उसने सोचा—'भीख देने का काम मैंने ही बहू को सौंप दिया था। अब उससे कैसे कहूँ कि तुम भीख न दो! क्या सब लोग मेरी हँसी उड़ाने न लगेंगे!'

कुछ ही दिनों में धरमू की बहू की बड़ाई आस-पास के सब गाँवों में होने लगी। यह सुन कर धरमू मन ही मन और भी कुढ़ने लगा। उसने सोचा 'घर लुटता है मेरा और बड़ाई होती है उसकी! अगर यह दान-पुण्य मेरे हाथों होता तो कम से कम मेरी बड़ाई तो होती।' लेकिन तब से धरमू की पत्नी का मन बहुत प्रसन्न रहने लगा।

३

किसी महाराज के यहाँ एक मंत्री था जो बहुत उदार स्वभाव का था। वह नित्य अन्न-दान करता था। देश-विदेश से ब्राह्मण आकर रोज उसके घर भोजन किया करते थे। रोज कितने लोग आते थे, कितने लोग जाते थे, कितने लोग उसके यहाँ भोजन करते थे इसका पता किसी को न था। यहाँ तक कि खुद मंत्री भी नहीं जानता था। एक दिन एक ब्राह्मण की ओर मंत्री का ध्यान गया जो दो तीन रोज से उसे दिखाई पड़ रहा था। 'आप किस गाँव के हैं?' मंत्री ने उससे पूछा। 'क्या आप मुझे नहीं जानते? मैं आपका मौसेरा भाई हूँ।' उस ब्राह्मण ने आश्चर्य के साथ जवाब दिया। मंत्री को और भी अचरज हुआ। उसने मन में सोचा—'मैंने तो कभी नहीं सुना कि मेरे कोई मौसी भी है। फिर ये महाशय, मेरे मौसेरे भाई कहाँ से निकल आए?' मंत्री को स्तब्ध देख कर ब्राह्मण ने मुसकुराते हुए कहा—'मंत्री जी! क्या आप ऊँचे पद पर पहुँचते ही अपने रिश्ते-नाते भी भूल गए! मैं याद दिलाता हूँ। मेरी और आपकी माताएँ सगी बहनें हैं। बड़ी बहन ज्येष्ठा देवी (निर्धनता की देवी) का प्रिय-पुत्र मैं हूँ। छोटी बहन लक्ष्मी देवी के प्रिय-पुत्र आप हैं। आपकी माता के लच्छन आप में दिखाई देते हैं और मेरी माता के मुझमें। हम दोनों के भोग-भाग्य में अंतर आ गया। लेकिन वास्तव में हैं हम एक ही परिवार के। मौसेरा भाई होने के नाते मैं आपसे मदद माँगने आया हूँ।' ब्राह्मण की समय-स्फूर्ति से खुश होकर मंत्री ने उसे एक नौकरी दिला दी। ब्राह्मण अब सुख से दिन बिताने लगा।

किसी समय एक बड़ा व्यापारी था। उसने एक बार विदेश जाते वक्त घर में सबसे पूछा कि 'तुम लोगों के लिए क्या क्या लाऊं?' तब सब लोगों ने अपनी अपनी इच्छा बता दी। तब उसने अपने तोते से जिसे उसने हाल ही से पालना शुरू किया था, पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए। तब तोते ने कहा—'मैं जिस जंगल में पकड़ा गया था, वहाँ एक बड़ा पीपल का पेड़ है। उस पर बहुत से तोते रहते हैं। तुम उनसे जाकर कहना कि तुम जैसा ही एक तोता मेरे पास भी है और उसने यह बात तुम से बताने को कहा है। वे जो जवाब देंगे, वह तुम लौट कर मुझे बताना। इसके सिवा मुझे कुछ नहीं चाहिए।' दूसरे दिन व्यापारी रवाना हुआ। छः महीने में अपना काम पूरा करके वह तोते के बताए हुए जंगल में पीपल के पेड़ के पास गया और बोला—'ऐ तोतो! तुम जैसा ही एक तोता मेरे पास भी है। यह बात उसने तुमसे बताने को कहा है।' उसकी बात सुनते ही एक तोते ने पंख फड़फड़ाते हुए नीचे गिर कर प्राण दे दिए। बाकी तोते उड़ गए। व्यापारी ने लौट कर अपने घर के तोते से यह हाल सुनाया। तुरंत उसने भी प्राण छोड़ दिए। व्यापारी ने दुखी होकर पिंजड़े के द्वार खोल दिए और उस तोते को बाहर रख दिया। तुरंत वह पंख फड़फड़ा कर उड़ा और सामने के पेड़ की डाल पर जा बैठा। व्यापारी हक्का-बक्का रह गया। तोते ने उससे कहा—'हे व्यापारी! मैं मुक्त होना चाहता था। इसलिए मैंने अपने बंधुओं के पास यह संदेश भेजा था। उन्होंने तुम्हारे द्वारा मुक्ति पाने का उपाय बता दिया।' यह कह कर वह तोता उड़ गया।

महाराष्ट्र देश में पैठनपुर नाम के गाँव में एकनाथ नाम का लड़का रहता था। उस गाँव के नजदीक ही जगन्नाथ नाम के एक पंडित रहते थे। उनके पास उपदेश पाने के लिए दूर दूर से लोग आया करते थे। एकनाथ ने भी उनके पास जाकर कहा—'भगवन! आप मुझे भी अपना चेला बना लें और मंत्रोपदेश करें!' पंडित जगन्नाथ ने एक बार उसे सिर से पैर तक देख कर कहा—'लड़के! अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? जाओ! बड़े होने के बाद आना!' लेकिन एकनाथ वहाँ से टला नहीं। उसने कहा—'भगवन! उपदेश के लिए बड़े होने की क्या जरूरत है? बालक ध्रुव की कितनी उम्र थी? क्या उसने भगवान को नहीं पाया?' यह कह कर वह बहुत प्रार्थना करने लगा।

'अच्छा, तो सुनो! जिसका चित्त एकाग्र नहीं होता उसको मंत्रोपदेश नहीं दिया जाता। जब मुझे विश्वास हो जाएगा कि तुम्हारा चित्त एकाग्र हो गया तभी मैं तुम्हें मंत्र दूँगा। इसी शर्त पर मैं तुम्हें अपना चेला बनाऊँगा।' लाचार होकर जगन्नाथ ने कहा। 'जैसी आपकी कृपा!' एकनाथ ने कहा। गुरू के घर में एक एक चेला एक एक काम करता था। एक दिन गुरू ने एकनाथ से कहा—'बेटा! तुम कमजोर हो। कड़ी मेहनत नहीं कर सकते। इसलिए मैं तुम्हें घर का हिसाब-किताब सौंपता हूँ।' उस दिन से एकनाथ उस घर का हिसाब लिखने लगा। इस तरह बरसों बीत गए। एक दिन एकनाथ के

विनय घेडेकर

हिसाब में एक पैसे का फरक पड़ गया। 'यह पैसा कहाँ गया!' एकनाथ ने बहुत दिमाग लड़ाया। लेकिन उसे कुछ पता न चला। रात हो गई। मेहमान लोग खा-पी चुके। नौ बज गए। चेले भी खा-पीकर सो रहे। लेकिन एकनाथ आमद-खर्च के बही-खातों के पन्ने पलटता ही रहा। आखिर बारह बज गए। किसी वजह से जगन्नाथ की नींद टूट गई। उन्होंने देखा कि दीए के सामने बैठ कर एकनाथ हिसाब देख रहा है। तब उनको याद आया कि भोजन के समय भी एकनाथ उन्हें कहीं न दिखाई दिया था। वे उसके पास आ खड़े हो गए। लेकिन एकनाथ इतना तल्लीन था कि उस को इसका पता ही न था। एक घंटा और बीत गया। आखिर एकनाथ 'हाँ, मिल गया!' कह कर आनंद से उछल पड़ा। तब उसे पता चला कि गुरू जी सामने खड़े हैं। उसने चकित होकर पूछा—'भगवन! आप यहाँ कितनी देर से खड़े हैं!' 'तुम इतने एकाग्र होकर क्या खोज रहे थे!' जगन्नाथ ने पूछा। 'एक पैसा! आज हमारे घर जो मेहमान आए थे उनमें से एक का चेला एक पैसा माँग कर ले गया था। मैं यह किताब में लिखना भूल गया था। अभी याद आ गया!' एकनाथ ने कहा। यह सुन कर जगन्नाथ का हृदय पिघल गया। उन्होंने पूछा—'तो तुम खाना-पीना सब भूल कर इतनी देर से एक पैसा खोज रहे थे!' 'हाँ! खाने-पीने और सोने की परवाह करूँगा तो काम कैसे

चलेगा !' यह कह कर एकनाथ अपने कमरे में चला गया। उसी समय पंडित जगन्नाथ ने एक निश्चय कर लिया। उन्होंने सोचा—'एक पैसे के लिए यह इतनी निष्ठा रखता है। अगर इसी एकाग्रता का भगवान के अन्वेषण में उपयोग किया जाय तो कितना अच्छा हो! आज से इसको हिसाब-किताब में अपना समय नष्ट करने नहीं देना चाहिए।' दूसरे दिन उन्होंने एकनाथ को बुला कर कहा—'बेटा! आज एक चांडाल हमारा मेहमान बन कर आएगा। अगर तुम सेवा-शुश्रूषा करके उसके हृदय में घर कर सको, तो वही तुम्हें तारक-मंत्र का उपदेश करेगा। तुम संशय न करो कि एक चांडाल मुझे मंत्रोपदेश कैसे करेगा! क्योंकि वह चांडाल ही मेरे गुरू दत्तात्रेय हैं। उनके साथ चार कुत्ते होंगे। वे ही चारों वेद हैं। आज तुम भी उनको अपना गुरू बना कर सदा के लिए मुक्त हो जाओ!'

'लेकिन भगवन! मेरा हृदय तो आप के अर्पण हो चुका है। वह दूसरों की शरण कैसे लेगा! इसलिए चाहे कुछ भी हो, मैं तो आपसे ही उपदेश लूँगा।' एकनाथ ने विनीत स्वर में कहा। भगवान दत्तात्रेय के आने के बाद जगन्नाथ ने उनकी सेवा करके सबेरे एकनाथ से उनकी जो बातचीत हुई थी, वह कह सुनाई। तब भगवान ने कहा—'जगन्नाथ! तुम्हारे शिष्य ने अन्य गुरुओं से उपदेश लेने से इन्कार कर दिया। इसमें बुराई कौन सी है! तुम चिंता न करो। जिस तरह पेड़ की जड़ को सींचने से वह

वह सारे पे.. को प्राप्त होता है, उसी तरह कोई भी तुम्हारी जो सेवा करेगा वह भी मुझे ही प्राप्त होगी। तुम्हीं उसे मंत्र का उपदेश दो। वह बड़ा भारी कवि बनेगा। तुम उसे आज्ञा दो कि वह अपनी कविता-शक्ति का उपयोग करके मराठी में वाल्मीकि जैसी एक रामायण लिखे।' इतना कह कर दत्तात्रेय अदृश्य हो गए। एकनाथ की आत्माभिलाषा पूरी हुई। पंडित जगन्नाथ ने उसे मंत्र का उपदेश दिया और कहा—'बेटा! अब तुम पैठनपुर लौट जाओ। अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करो और मराठी में एक रामायण रचो!' गुरु के आज्ञानुसार एकनाथ पैठनपुर लौट गया और रामायण लिखने लगा। कुछ ही दिनों में वह रामायण के रस में तल्लीन हो गया। सीता-राम के वनवास के समय अयोध्यावासियों के साथ उसने भी आँसू बहाए। जंगल में लक्ष्मण के साथ साथ कंद-मूल की खोज में वह भी भटकता फिरा। सीता को जब रावण उठा ले जाने लगा तो जटायु के साथ साथ उसने भी युद्ध किया। इस तरह दुनिया से नाता तोड़ कर घर में बंद रहने के कारण एकनाथ के बारे में तरह तरह की अफवाहें फैलने लगीं। लोग उससे जलने लगे। लोगों ने चाहा कि किसी तरह उसे बाहर निकाला जाए। इस उद्देश से कुछ लोगों ने उसका दरवाजा खटखटाया। लेकिन एकनाथ ने कुछ न सुना। कुछ लोगों ने पत्थर फेंके। कुछ लोगों ने हल्ला मचाया। लेकिन समाधि-मग्न योगी की तरह एकाग्र होकर रामायण लिखने

वाले एकनाथ को बाहरी दुनिया की कोई खबर न थी। आखिर सब लोग हार कर लौटना ही चाहते थे कि अचानक दीवार लांघ कर, ताड़ के पेड़ जितनी ऊँचाई तक उछल कर एकनाथ उनके बीच आ गिरा। उसे देख कर सब लोग घबरा गए। उतनी ऊँचाई से गिरने के कारण एकनाथ एकदम बेहोश हो गया। लोग जो उसे कुचलने आए थे, अपने मन का द्वेष भूल गए। अनेक उपचार करके एकनाथ को होश में ले आए। जब उसे अच्छी तरह होश आ गया तो उन्होंने पूछा—'बात क्या थी! तुम क्यों उस तरह उछल पड़े!' उनकी बात सुन कर एकनाथ ने चकित होकर पूछा—'मैं कहाँ उछला था! उछलने वाले तो हनुमान थे! सागर लांघ कर हनुमान जी अभी लंका में घुस गए हैं!' यह कह कर उसने अपने बाएँ हाथ का ताड़-पत्र दिखाया। उसमें क्या लिखा था! उसमें सीता की खोज में हनुमान जी के सागर लांघ कर लंका में प्रवेश करने का वृत्तांत लिखा था। ठीक उसी समय जगन्नाथ अपने शिष्य से भेंट करने वहाँ आए। सारा किस्सा सुनने के बाद उन्होंने कहा—'एकनाथ महाकवि है। वह अपने एक एक पात्र में लीन होकर काव्य लिख रहा है। इसलिए तुम लोग उसे नाहक दिक न करो। वास्तव में बड़े भाग्य से मुझे यह शिष्य मिला है। इसके द्वारा तुम सभी तर जाओगे!' उनकी बात सुन कर गाँव वालों को ज्ञानोदय हुआ। फिर एकनाथ को किसी ने दिक नहीं किया। इस तरह महाभक्त एकनाथ की रामायण से सारा महाराष्ट्र धन्य हो गया।

चन्दामामा पहेली

सङ्केत

बायें से दायें:

१. देवता

३. झलक

५. मेल

६. हिंदुस्तानी

७. अदृश्य

९. अमृत

१२. अन्न

१३. दया

ऊपर से नीचे:

१. निर्मल

२. लक्ष्मी

३. सहारा

४. मदद

७. कमी

८. अंतिम

१०. विचार

११. साग
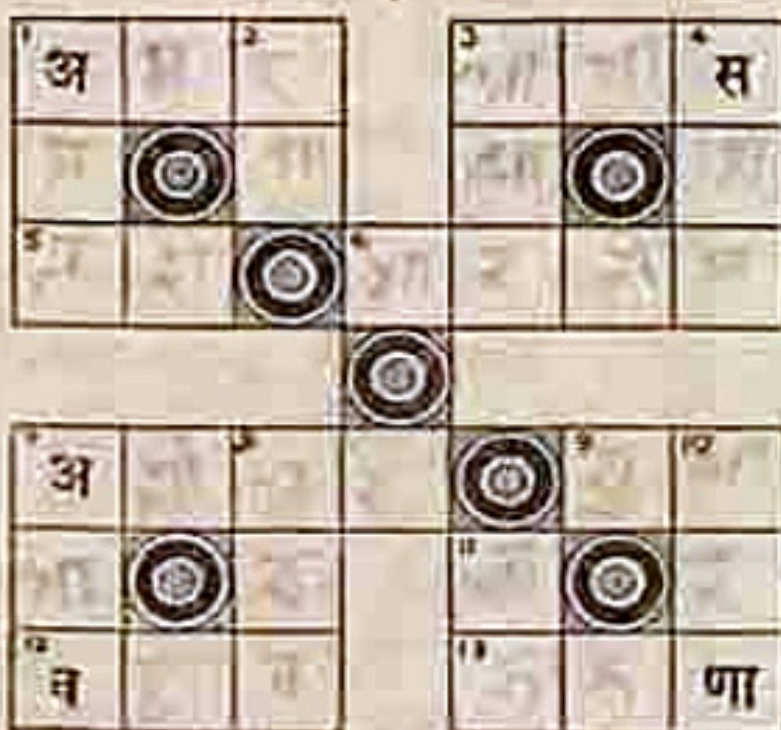
रङ्ग बदलने वाली गेंद

बाजीगर गोल नली लगी हुई एक निकेल-स्टैंड और एक रबर की मामूली सफेद गेंद ले आता है। उस गेंद को नली के ऊपर रख कर दबा देता है तो वह नीचे से निकल आती है। बाजीगर उस गेंद को हाथ में लेकर कहता है कि इस बार मैं इस गेंद को नली में छोड़ कर नीली गेंद बनाऊँगा। यह कह कर वह इस बार गेंद को नली से छोड़ता है तो सफेद गेंद सचमुच ही नीली बन जाती है। तब दर्शक लोग चकित होकर कहने लगते हैं—'अच्छा! उस गेंद को फिर से सफेद बनाओ तो देखें!' तब बाजीगर नीली गेंद को फिर से नली में छोड़ देता है तो वह नीचे आते ही सचमुच सफेद बन जाती है। दर्शक लोग यह देख कर स्तब्ध रह जाते हैं।

इसका रहस्य सुनो—वास्तव में उस नली में कोई जादू नहीं है। नली को बनवाते समय ही इस बात का ध्यान रहे कि वह इतनी बड़ी हो जिस में रबर की गेंद ऊपर से छोड़ने पर नीचे से निकल जाए। लेकिन वह इतनी बड़ी न हो जिससे रबर की गेंद बिना किसी रुकावट के फिसल जाए। वह सिर्फ इतनी बड़ी हो जिससे गेंद बीच में अटक जाय और दबाव देने पर ही बाहर निकले। बाजीगर दर्शकों को तो एक ही गेंद दिखाता है। लेकिन यह तमाशा करने

में तीन गेंदों का उपयोग करता है। उनमें दो तो सफेद हैं और एक नीली है। बगल के चित्र में देखो तो यह बात तुम्हारी समझ में आ जाएगी। बाजीगर पहले ही से उस नली में एक सफेद और एक नीली गेंद घुसा रखता है। वह कहता है—'इस नली में कुछ नहीं है।' और हाथ की सफेद गेंद को नली में डाल कर दबा छोड़ता है। यह गेंद तो नली में ही रह जाती है। लेकिन उसके दबाव से नीचे की सफेद गेंद बाहर निकल आती है। दर्शक लोग समझते हैं कि बाजीगर ने जो गेंद उन्हें दिखाई थी वही बाहर निकल आई है। अब तो नीली गेंद नीचे आ जाती है न! अब बाजीगर कहता है—'देखिए! मैं इस सफेद गेंद को नीली बना देता हूँ।' यह कह कर वह हाथ की सफेद गेंद नली में डाल कर दबा छोड़ता है। इस बार नीली गेंद नीचे से निकल आती है। यानी दोनों सफेद गेंदें नली में ही रह जाती हैं। समझ में आ गया न! लेकिन एक बात याद रख लो। यह तमाशा दर्शकों को एक बार से ज्यादा न कर दिखाओ। उनके बहुत आग्रह करने पर भी नहीं। नहीं तो सारी पोल खुल जाएगी।

जो इस सम्बन्ध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेजीशियन
१२/२ ए, कमीर लेन, बालीगंज,
कलकत्ता-१९.

रङ्ग भरो—पाँचवें चित्र की कहानी

अनेक कष्ट उठा कर राजकुमार ने किसी तरह उस पेड़ से लिपटे हुए साँप को मार डाला। अब वह पेड़ पर चढ़ने लगा। लेकिन मन ही मन डर रहा था कि कहीं उसके ऊपर पहुँचने के पहले ही वह पँचरंगा तोता फुर्र से उड़ न जाए। पर आश्चर्य! वह तोता न हिला, न डुला। राजकुमार ने बड़ी उमंग से उस तोते को पकड़ लिया। उसे जेब में रख कर वह घर की ओर लौट चला। कुछ दिन बाद वह महल में पहुँचा। वहाँ महात्मा ध्यान-मग्न थे। राजकुमार ने जेब से तोते को निकाल कर उनके सामने रख दिया। लेकिन पँचरंगे होने के बदले तोता अब लाल दिखाई देने लगा था। यह देख कर राजकुमार घबरा गया। सवेरा हुआ। महात्मा ने अपना ध्यान तोड़ा। तब तोता फिर पँचरंगा दिखाई देने लगा। यह देख कर राजकुमार को बहुत आनंद हुआ। तब महात्मा ने राजकुमार की पीठ ठोंक कर कहा—'क्यों! कल तुम, इस तोते को लाल देख कर घबरा गए थे न! लो! इस का रहस्य सुनो—अमावस के दिन ही तोता पँचरंगा दिखाई देता है। बाकी दिनों वह एक एक रंग बदलता रहता है। कुछ भी हो, तुम इसे पकड़ लाए; यह देख कर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। लेकिन और एक बात पहले ही सुन लो—ज्यों ही तुम्हारे एक लड़का पैदा होगा त्यों ही या तो तुम्हें, या उस लड़के को देवी के आगे बलि चढ़ जाना होगा। तुम इसके लिए जब तक राजी न होगे, तब तक मैं तुम्हें राजकुमारी को साधारण रूप दिलाने का रहस्य नहीं बताऊँगा।' यह सुन कर राजकुमार स्तब्ध रह गया। लेकिन उसे कोई न कोई जवाब देना ही था। इसलिए उसने 'अच्छा! ऐसा ही करूँगा!' कह कर बात टाल दी। तब उस महात्मा ने उस पँचरंगे तोते का एक पंख नोच कर राजकुमार को दिया और कहा—'इसको राजकुमारी के सामने जला दो जिससे धुँआ उसको लग जाए। बस, उसे अपना रूप मिल जाएगा। हाँ, अपना वादा न भूल जाना।' राजकुमार उनसे विदा लेकर घर आ पहुँचा। महात्मा से उसने जो वादा किया था वह उसने एक पंडित जी को ही बताया। तब उस पंडित को हर्ष के बदले शोक ही हुआ। लेकिन राजा और रानी जो यह न जानते थे, बहुत खुश हुए।

रङ्ग भरो (कहानी) : चित्र ६

विनोद-वर्ग

•

निम्न-लिखित संकेतों की सहायता से छहों शब्द पूर्ण करो। शब्द सही होंगे तो सब के अंतिम अक्षर एक से होंगे। इतना ही नहीं: इन छहों शब्दों के दूसरे अक्षरों को ऊपर से नीचे की ओर मिला कर पढ़ने पर एक प्रमुख नेता का नाम निकल आएगा।

1. पंखा
2. युवक
3. आँगन
4. धुकनी
5. वसुमता
6. साग

अगर इसे पूरा न कर सको तो जवाब के लिए ५८ वाँ पृष्ठ देखो।

मैं कौन हूँ ?

•

मैं भगवान शिवजी का चार अक्षरों वाला एक नाम हूँ।

मेरे नाम का पहला अक्षर
मरण में है,
पर निधन में नहीं।

मेरे नाम का दूसरा अक्षर
प्रहार में है,
पर वसंत में नहीं।

मेरे नाम का तीसरा अक्षर
संदेह में है,
पर संशय में नहीं।

मेरे नाम का चौथा अक्षर
वहम में है,
पर भ्रम में नहीं।

ज़रा बताओ तो, मैं कौन हूँ !

अगर न बता न सको तो उत्तर के लिए ५८-वाँ पृष्ठ देखो।

एक रेखा के चित्र
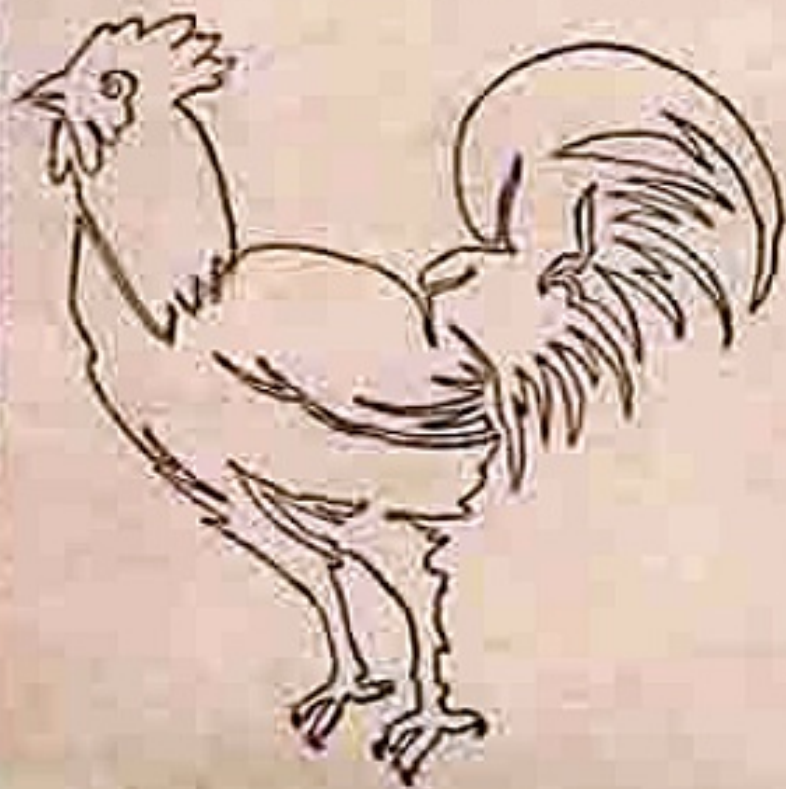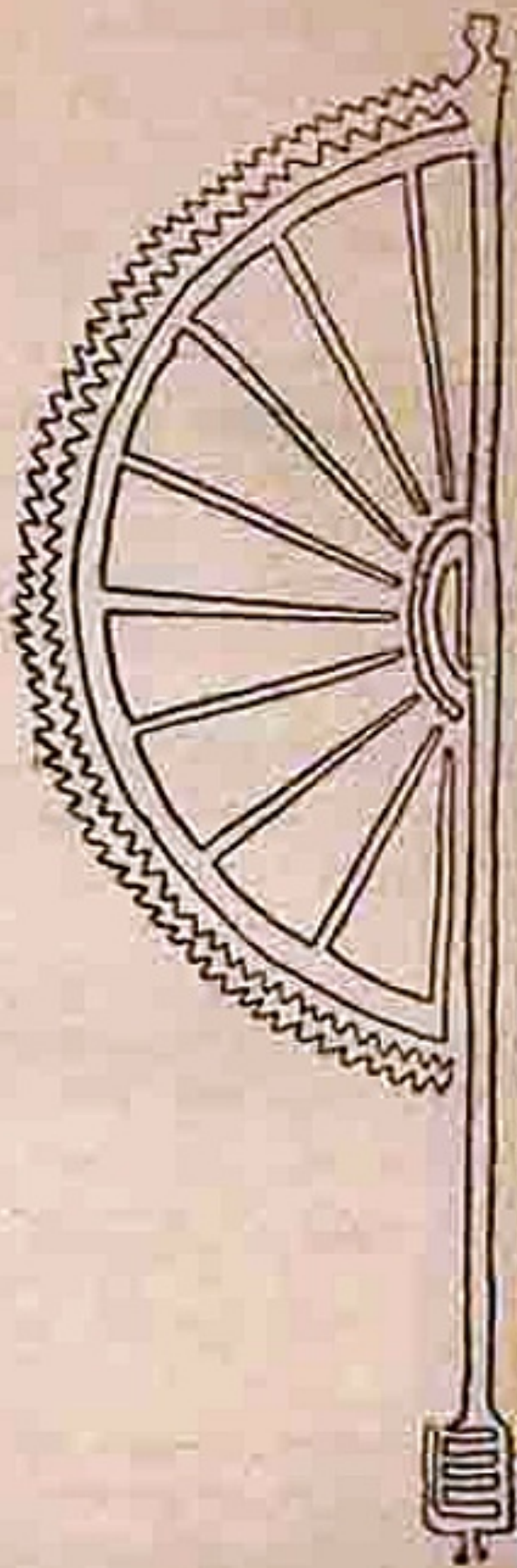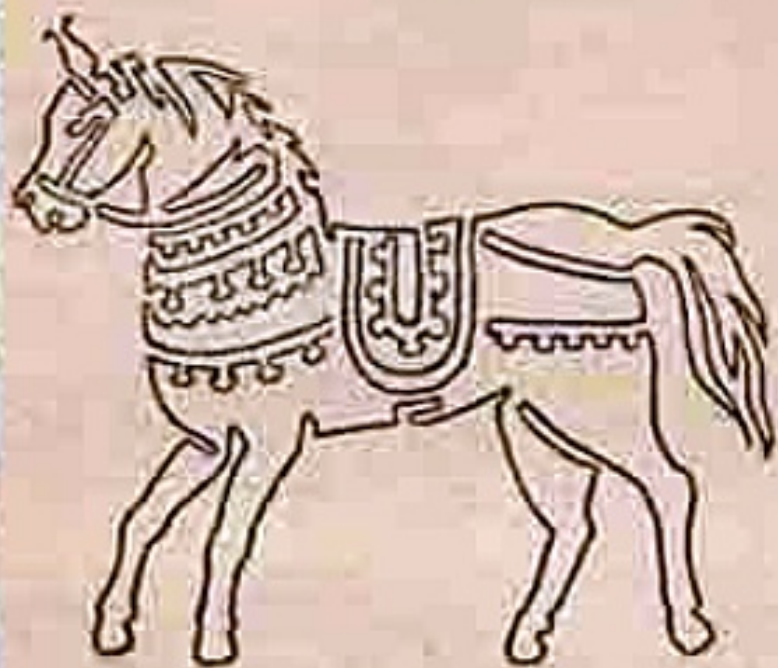
वर्षा-गीत

श्री० 'अशोक' बी० ए०

तुम बरसो, पानी बरसो !

तुम उमड़-घुमड़ अम्बर के ऊपर
गरज गरज कर बरसो !

तुम बरसो, पानी बरसो ।

धरती आँचल हिला हिलाकर
मंगल रोज मनाए !
देती दोनों हाथ उठा कर
तुमको मेघ ! दुआएं ।
तुम उमड़-घुमड़ कर मिटो और
फिर नवजीवन ले बरसो !

तुम बरसो पानी बरसो ।

नन्हे नन्हे पौधे खुल कर
झूम झूम यश गाते !
पहन पहन मखमल के कुरते
सब का चित्त चुराते ।
देख देख कर तुम भी हे घन !
अपना यह धन हरषो ।

तुम बरसो, पानी बरसो ।

बीर-बहूटी रंग लाल यह
कहो, कहाँ से लाई ?
पहन हरी साड़ी धरती ने
रोली बिन्दु लगाई ।
तुम भी अपने इन्द्र-धनुष को
खिल धरती पर बरसो !

तुम बरसो, पानी बरसो ।

चन्दामामा पहेली का जवाब :

अ	म	र		आ	मा	स
म	●	मा		धा	●	हा
ल	ता	●	भा	र	तां	य
			●			
अ	गो	च	र	●	सु	धा
भा	●	र		शा	●	र
व	ह	म		क	रु	णा

विनोद-वर्ग का जवाब :

दाएँ से बाएँ :

१. व्यजन; २. जवान;
३. सहन; ४. चूरन;
५. दालान; ६. सालन

ऊपर से नीचे :

'जवाहरलाल'

'जानते हो क्यों !' का जवाब :

'महादेव'

Photo by B. Ranganathan

CHANDAMAMA (HINDI) DECEMBER 1951 REGD No. M. 5452